

## दुर्गा चालीसा

॥ दुर्गा चालीसा ॥

॥ जय माता दी ॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।  
नमो नमो अंबे दुःख हरनी ॥

निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।  
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥

शशि ललाट मुख महाविशाला ।  
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥

रूप मातु को अधिक सुहावे ।  
दरश करत जन अति सुख पावे ॥

तुम संसार शक्ति लै कीना ।  
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला ।  
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥

प्रलयकाल सब नाशन हारी ।  
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें ।  
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥

रूप सरस्वती को तुम धारा ।  
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा ।  
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो ।  
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं ।  
श्री नारायण अंग समाहीं ॥

क्षीरसिन्धु में करत विलासा ।  
दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी ।  
महिमा अमित न जात बखानी ॥

मातंगी अरु धूमावति माता ।  
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी ।  
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ॥

केहरि वाहन सोह भवानी ।  
लांगुर वीर चलत अगवानी ॥

कर में खप्पर खड्ग विराजै ।  
जाको देख काल डर भाजै ॥

सोहै अस्त्र और त्रिशूला ।  
जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥

नगरकोट में तुम्हीं विराजत ।  
तिहुँलोक में डंका बाजत ॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे ।  
रक्तन बीज शंखन संहारे ॥

महिषासुर नृप अति अभिमानी ।  
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥

रूप कराल कालिका धारा ।  
सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब ।  
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

आभा पुरी अरु बासव लोका ।  
तब महिमा सब रहें अशोका ॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ।  
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥

प्रेम भक्ति से जो यश गावें ।  
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ॥

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई ।  
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई ॥

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी ।  
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥

शंकर आचारज तप कीनो ।  
काम क्रोध जीति सब लीनो ॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को ।  
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥

शक्ति रूप का मरम न पायो ।  
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥

शरणागत हुई कीर्ति बखानी ।  
जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।  
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥

मोको मातु कष्ट अति घेरो ।  
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥

आशा तृष्णा निपट सतावै ।  
रिपु मुरख मोही डरपावे ॥

शत्रु नाश कीजै महारानी ।  
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥

करो कृपा हे मातु दयाला ।  
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला ।

जब लागि जियऊं दया फल पाऊं ।  
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं ॥

श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै ।  
सब सुख भोग परमपद पावै ॥

देवीदास शरण निज जानी ।  
करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

॥ इति श्रीदुर्ण ॥

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |